30-06-2021

स्थितियां देखकर गन्ना की वैरायटी करें तैयार

कानपुर (एसएनबी)। कृषि जलवायु और अन्य परिस्थितियों को ध्यान में रखते हुए कई गन्ना किस्मों को तैयार किया जाना चाहिए। यह बात 'आजादी का अमृत महोत्सव' के तत्वावधान में राष्ट्रीय शर्करा संस्थान द्वारा राष्ट्रीय वेबिनार' सीओ 0238 के बाद गन्ने की उन्नत किस्म' विषय पर संस्थान के निदेशक नरेन्द्र मोहन ने कही।

उन्होंने कहा कि उ.प्र. में सन 2013-14 तक प्रति हेक्टेअर पैदावार देने वाली प्रजातियों की अपेक्षा 80 टन प्रति हेक्टेयर तक उपज देने वाली गन्ने की इस प्रजाति का विकास प्रशंसनीय है। क्योंकि इस गन्ने की अधिक उपज के साथ-साथ शर्करा प्राप्यता दर को 9 से 11 फीसद की दर तक बढ़ाया जा सकता है। भारतीय गन्ना अनुसंधान संस्थान लखनऊ के निदेशक डॉ.एडी पाठक ने कहा कि जल्द तैयार होने वाली उच्च गुणवत्ता की प्रजातियों तथा देरी से तैयार होने वाली गन्ने की प्रजातियों को आवश्यकतानुसार उगाने का सुझाव दिया। उप्र. गन्ना अनुसंधान शाहजहांपुर के निदेशक डॉ.जे सिंह ने रोपण के लिए स्वस्थ और रोगमुक्त बीज के चयन पर जोर दिया। उन्होंने सुझाव दिया कि क्षेत्र विशेष के लिए अनुशंसित किस्मों को ही उगाया जाना चाहिये। डीसीएम श्रीराम लि. के कार्यकारी निदेशक और मुख्य कार्यकारी अधिकारी आरएल तमक ने किसी भी प्रजाति की उपज तैयार करने से पूर्व उसके वैज्ञानिक परीक्षण और मुल्यांकन का सुझाव दिया। वेबिनार में डॉ.अशोक कुमार मुख्य रुप से उपस्थित थे।

राष्ट्रीय शर्करा संस्थान द्वारा आयोजित वेबिनार को सम्बोधित करते वक्ता। फोटो : एसएनबी

उच्च उपज, अधिक शर्करा प्रदान करने वाली नई प्रजाति विकसित करें वैज्ञानिक

सीओ-0238 के बाद गन्ने की उन्नत किस्म विषय पर वेबिनार का आयोजन

कानपुर, 29 जून। आजादी का अमृत महोत्सव के तत्वावधान में राष्ट्रीय शर्करा संस्थान की ओर से राष्ट्रीय वेबिनार सीओ-0238 के बाद गन्ने की उन्नत किस्म विषय पर आयोजन किया गया। कार्यक्रम का शुभारंभ करते हुए अपर मुख्य सचिव संजय भूसरेडडी ने वैज्ञानिकों से उच्च उपज और अधिक शर्करा प्रदान करने वाले उन्नत किस्म के गन्ना को विकसित करने के लिए अथक प्रयास करने का आह्वान किया। पूर्वी और मध्य उ.प्र. में गन्ने की किस्म सीओ-0238 रेड रोट नामक रोग से प्रभावित होने लगी है। नई गन्ना प्रजातियों से प्रतिस्थापित करने के लिए कार्ययोजना तैयार करने को बल दिया। छह वर्षों के दौरन गन्ने की यह प्रजाति चमत्कारी साबित हुई है। इसे धीरे-धीरे नई किस्मो से प्रतिस्थापित करने की आवश्यकता है।

एनएसआई के निदेशक नरेंद्र मोहन ने कहाकि उ.प्र. में सन 2013-14 तक 60 टन प्रति हेक टेयर पैदावार देने वाली प्रजातियों की उपेक्षा 80 टन प्रति हेक टेयर तक उपज देने वाले गन्ने की इस प्रजाति का विकास प्रशंसनीय है। क यो कि इससे गन्ने की अधिक उपज के साथ-साथ शर्करा प्राध्यता दर को 9 प्रतिशत से 11 प्रतिशत की दर तक बढ़ाया जा सका। उन्होंने कहाकि इस किस्म को मिल मालिकों और किसानों ने हाथो हाथ लिया था। चीनी मिलों ने इस प्रजाति के उत्पादन को 100 प्रतिशत कृषि क्षेत्र तक कर दिया जो कि आवांछित वृद्धि है। तकनीकि सत्र में भारतीय गन्ना अनुसंसाधन संस्थान, लखनऊ के निदेशक डा. ए.डी. पाठक ने जल्दी तैयार होने वाली उच्च गुणवत्ता की गन्ने की प्रजाति सीओ एलके 14201, सीओ 15023, सीओ 13235 तथा देरी से तैयार होने वाली गन्ने की प्रजाति सीओ एलके09 204, सीओ एलके 11204 आदि को आवश्यकता उगाने का सुझाव दिया। निदेशक डा. जे. सिंह, डीसीएम श्रीराम लि. के कार्यकारी अधिकारी आर.एल. तमक आदि ने विचार रखे। इस दौरान आचार्य डा. अशोक कुमार ने लाल सइन रोग से प्रभावित गन्ने की प्रजाति सीओ सीओ 0238 की उपज तैयार किये जाने से पूर्वी व मध्य उ.प्र. में हुई क्षति का वितरण प्रस्तुत किया। किसानों को क्षति से बचाने के लिए बीज प्रतिस्थापन कार्य क्रम चलाये जाने की आवश्यकता है।

वेबिनार में निदेशक प्रो. नरेन्द्र मोहन व अन्य।

अधिक शर्करा देने वाली गन्ने की प्रजातियों की खेती करें

▶ आजादी का अमृत महोत्सव के तत्वावधान में एनएसआई ने उन्नत किस्म के बीजों पर सेमिनार आयोजित किया

ब्रीटीएनएन

कानपुर। 'आजादी का अमृत महोत्सव' के तत्वावधान में राष्ट्रीय शर्करा संस्थान, कानपुर ने एक राष्ट्रीय वेबीनार 'सीओ 0238 के बाद गन्ने की उन्नत किस्में' विषय पर आयोजित किया गया। इस कार्यक्रम का शुभारंभ संजय भूसरेड्डी, अपर मुख्य सचिव, शर्करा उद्योग एवं गन्ना विकास तथा आबकारी विभाग और शर्करा व गन्ना आयुक्त, उत्तर प्रदेश के द्वारा किया गया। भूसरेड्डी ने कार्यक्रम में वैज्ञानिकों से उच्च उपज और अधिक शर्करा प्रदान करने वाले उन्नत किस्म के गन्ना को विकसित करने के लिये अथक प्रयास करने का आह्वान किया क्योंकि पूर्वी और मध्य उ.प्र. में प्रमुखता से उगाये जाने वाले गन्ने की यह किस्म सी ओ 0238 रेड रोट (लाल सड़न) नामक रोग से प्रभावित होने लगी है। उन्होंने कहा कि गन्ने की कई नयी किस्में के विकास के अग्रिम चरण में हैं तथापि हमें यह सुनिश्चित करना होगा कि जल्दी और देर से तैयार होने वाली एवं उच्च शर्करा उत्पादन वाली किस्मों में संतुलन बना रहे। वी.के. शुक्ला, अपर गन्ना आयुक्त, उ.प्र. ने सी ओ 0238 प्रजाति के गन्ने को धीरे-धीरे नई गन्ना प्रजातियों से प्रतिस्थापित करने के लिये कार्ययोजना तैयार करने पर बल दिया। उन्होंने कहा कि विगत छः वर्षों के दौरान गन्ने की यह प्रजाति चमत्कारी साबित हुई थी, परंतु अब इसे धीरे-धीरे नई किस्मों से प्रतिस्थापित करने की आवश्यकता है।

9 से 11% शर्करा मिलने वाले गन्ने की प्रजातियां पर ध्यान दें

राष्ट्रीय शर्करा संस्थान, कानपुर के निदेशक नरेंद्र मोहन ने अपने उद्घाटन भाषण में कहा कि उ.प्र. में सन 2013-14 तक 60 टन प्रति हेक्टेयर पैदावार देने वाली प्रजातियों की अपेक्षा 80 टन प्रति हेक्टेयर तक उपज देने वाली गन्ने की इस प्रजाति का विकास प्रशंसनीय है क्योंकि इससे गन्ने की अधिक उपज के साथ-साथ शर्करा प्राप्यता दर को 9.0 प्रतिशत से 11.0 प्रतिशत की दर तक बढ़ाया जा सका। उन्होंने कहा कि उच्च उपज और उच्च शर्करा मान वाली इस किस्म को मिल मालिकों और किसानों ने हाथों हाथ लिया था और यह किस्म दोनों के लिये पहली पसंद बन गई थी, जिसके परिणामस्वरूप विगत कुछ वर्षों में गन्ने की इस प्रजाति के उत्पादन क्षेत्र में बेतहाशा वृद्धि हुई। यह वृद्धि इस स्तर पर हुई कि कुछ चीनी मिलों ने इस प्रजाति के उत्पादन को 100 प्रतिशत कृषि क्षेत्र तक कर दिया जो कि अवांछित वृद्धि है। यही वह कारण है कि गन्ने के इस प्रजाति की गुणवत्ता में होने वाली कमी ने आज चीनी मिलों को इस वर्ष समस्या के द्वार पर खड़ा कर दिया है, जब इस प्रजाति में लाल सड़न रोग का प्रभाव स्पष्ट दृष्टिगोचर हो रहा है। यही कारण है कि कभी भी किसी एक प्रजाति को 50 प्रतिशत कृषि क्षेत्र से अधिक क्षेत्र में नहीं उगाया जाना चाहिये। इसके साथ ही उन्होंने कहा कि कृषि जलवायु और अन्य परिस्थितियों को ध्यान में रखते हुये कई गन्ना किस्मों को तैयार किया जाना चाहिये।

अच्छी क्वालिटी की प्रजातियां पर फोकस करें

तकनीकी सत्र के दौरान भारतीय गन्ना अनुसंधान संस्थान, लखनऊ के निदेशक, डॉ. ए.डी. पाठक ने जल्दी तैयार होने वाली उच्च गुणवत्ता की गन्ने की प्रजातियों सीओ एलके 14201, सी ओ 15023, सीओ 13235 तथा देरी से तैयार होने वाली गन्ने की प्रजातियों सीओएलके 09204, सी ओ एल के 11204 आदि को आवश्यकतानुसार उगाने का सुझाव दिया। उ.प्र. गन्ना अनुसंधान परिषद, शाहजहांपुर के निदेशक, डॉ. जे. सिंह ने रोपण के लिये स्वस्थ और रोगमुक्त बीज के चयन पर जोर दिया। उन्होंने यह भी सुझाव दिया कि क्षेत्र विशेष के लिये अनुशंसित किस्मों को ही उगाया जाना चाहिये।

गन्ने का वैज्ञानिक परीक्षण और मूल्यांकन जरूरी

डी सी एम श्रीराम लि. के कार्यकारी निदेशक और मुख्य कार्यकारी अधिकारी आर.एल. तमक ने किसी भी प्रजाति की उपज तैयार करने से पूर्व उसके वैज्ञानिक परीक्षण और मूल्यांकन का सुझाव दिया। वेबीनार के संयोजक तथा संस्थान के कृषि रसायन विभाग के सहायक आचार्य, डॉ. अशोक कुमार ने लाल सड़न रोग से प्रभावित गन्ने की प्रजाति सीओ 0238 की उपज तैयार किये जाने से पूर्वी और मध्य उ.प्र. में हुई क्षति का विवरण प्रस्तुत किया। उन्होंने कहा कि इस रोग के तेजी से हो रहे प्रसार के कारण मिल मालिकों और किसानों को हो रही क्षति से बचाने के लिये तत्काल एवं वृहद पैमाने पर बीज प्रतिस्थापन कार्यक्रम चलाये जाने की आवश्यकता है।

वैज्ञानिक गन्ने की उन्नत किस्मों का करें विकास

माई सिटी रिपोर्टर

वेबिनार में विशेषज्ञ बोले
सीओ0238 प्रजाति में लगने लगा है लाल सड़न रोग

कानपुर। आजादी का अमृत महोत्सव के बैनर तले नेशनल शुगर इंस्टीट्यूट में सीओ0238 के बाद गन्ने की उन्नत किस्म विषय पर वेबिनार हुआ। अपर मुख्य सचिव शर्करा उद्योग एवं गन्ना विकास संजय भूसरेड्डी ने वेबिनार का शुभारंभ किया।

उन्होंने कहा कि वैज्ञानिक उच्च उपज और अधिक शर्करा प्रदान करने वाली उन्नत किस्मों का विकास करें। मध्य और पूर्वी यूपी में उगाई जाने वाली सीओ0238 प्रजाति में अब लाल सड़न नामक रोग लगने लगा है। अब किसानों को नई किस्मों को उगाना चाहिए। अपर गन्ना आयुक्त वीके शुक्ला ने गन्ने की प्रजातियों के प्रतिस्थापन पर जोर दिया। एनएसआई के निदेशक प्रोफेसर नरेंद्र मोहन ने बताया कि चीनी मिलों ने सीओ0238 प्रजाति के उत्पादन को शत प्रतिशत कृषि क्षेत्र तक कर दिया। यह वृद्धि ठीक नहीं।

कभी भी कृषि प्रजाति को 50 प्रतिशत कृषि क्षेत्र से अधिक में नहीं उगाया जाना चाहिए। उत्तर प्रदेश गन्ना अनुसंधान परिषद शाहजहांपुर के निदेशक डॉ. जे सिंह ने रोगमुक्त बीजों के चयन पर जोर दिया। एनएसआई के विज्ञानी डॉ. अशोक कुमार ने लाल सड़न रोग से हुए नुकसान के संबंध में बताया।

अधिक चीनी उत्पादन करने वाली गन्ने की प्रजातियां करें विकसित

नेशनल शुगर इंस्टीट्यूट (एनएसआइ) की ओर से मंगलवार को हुए वेबिनार में गन्ना उत्पाद को बढ़ावा देने को लेकर विशेषज्ञों ने रखी अपनी राय

जास, कानपुर : अधिक उपज और अधिक चीनी उत्पादन करने वाली गन्ने की प्रजातियों को विकसित करने की आवश्यकता है। पूर्वी और मध्य उत्तर प्रदेश में प्रमुखता से उत्पन्न होने वाली सीओ 0238 प्रजाति में रेड रोट (लाल सड़न) रोग लगने की समस्या आ रही है। यह बातें शर्करा उद्योग, गन्ना विकास एवं आबकारी विभाग के अपर मुख्य सचिव संजय भूसरेड्डी ने कहीं।

वह मंगलवार को नेशनल शुगर इंस्टीट्यूट (एनएसआइ) की ओर से आयोजित वेबिनार में बोल रहे थे। उन्होंने कहा कि गन्ने की कई नई प्रजातियां विकसित होने के अंतिम चरण में हैं। अपर गन्ना आयुक्त वीके शुक्ला ने सीओ 0238 को नई प्रजातियों से प्रतिस्थापित करने के लिए कार्य योजना तैयार करने पर बल दिया। संस्थान के निदेशक प्रो. नरेंद्र मोहन ने बताया कि इस प्रजाति ने चीनी की प्राप्त दर को नौ से 11 फीसद तक बढ़ाया है। इसकी वजह से उत्पादन क्षेत्र में वृद्धि हुई। भारतीय गन्ना अनुसंधान संस्थान, लखनऊ के निदेशक डा. एके पाठक ने जल्दी तैयार होने वाली गन्ने की प्रजातियों की जानकारी दी। इस दौरान उप्र गन्ना अनुसंधान परिषद के निदेशक डॉ. जे सिंह, डीसीएम श्रीराम के सीईओ आरएल तमक मौजूद रहे।